माउस सूप

अर्नोल्ड लोबेल



माउस सूप

अर्नोल्ड लोबेल





सूप के लिए कहानियाँ

मधुमक्खियाँ और कीचड़



दो बड़े पत्थर



झींगुर



कांटेदार झाड़ी







एक चूहा एक पेड़ के नीचे बैठा था.

वह एक किताब पढ़ रहा था.

एक नेवले ने छलांग लगाई
और चूहे को पकड़ लिया.

नेवला चूहे को घर ले गया.

“वाह!" नेवले ने कहा.

"मैं तुम्हारा माउस सूप बनाऊंगा."

"ओह!" चूहे ने कहा.

"अच्छा तो मैं माउस सूप बनने जा रहा हूँ."





"लेकिन मेरे पास कोई कहानियाँ नहीं हैं," नेवले ने कहा.

"पर मेरे पास तो कहानियां हैं," चूहे ने कहा.

"मैं उन्हें अभी सुना सकता हूं."

"ठीक है," नेवले ने कहा.

"लेकिन जल्दी करो. मुझे बहुत भूख लगी है."

"देखो सूप में डालने के लिए यह रहीं चार कहानियाँ," चूहे ने कहा.

नेवले ने चूहे को खाना पकाने वाले बर्तन में डाल दिया.

"रुको!" चूहे ने कहा.

"इस सूप का स्वाद अच्छा नहीं होगा. क्योंकि इसमें कोई कहानी नहीं है."

माउस सूप को अच्छा और टेस्टी बनाने के लिए उसमें कहानियां मिलाई जानी चाहिए."





मधुमक्खियाँ और कीचड़

एक चूहा जंगल में घूम रहा था.

तभी एक पेड़ से मधुमक्खियों का छत्ता टूटकर नीचे गिरा.

वो छत्ता सीधे उसके सिर के ऊपर गिरा.

"मधुमक्खियों," चूहे ने कहा, "तुम्हें यहाँ से उड़ना होगा.

मैं अपने सिर के ऊपर मधुमक्खियों का छत्ता नहीं चाहता."







लेकिन मधुमक्खियों ने कहा,

"हमें तुम्हारे कान पसंद हैं,

हमें तुम्हारी नाक पसंद है,

हमें तुम्हारी मूंछें पसंद हैं.

अरे देखो, तुम्हारा सर हमारे छत्ते के लिए एक अच्छी जगह है.

हम यहां से कभी नहीं उड़ेंगे."

चूहा परेशान हुआ.

उसे समझ नहीं आया कि वो क्या करे.

मधुमक्खियों की भिनभिनाहट बहुत तेज़ थी.

चूहा आगे बढ़ गया.

वह एक कीचड़ भरे दलदल के पास पहुंचा.

"मधुमक्खियों," चूहे ने कहा,

"मेरे पास भी तुम्हारे जैसा छत्ता है.

देखो, यह मेरा घर है.

अगर तुम चाहो तो मेरे सिर पर ही बैठो.

लेकिन तुम्हें मेरे साथ मेरे घर चलना होगा."

"ठीक है," मधुमक्खियों ने कहा.

"हमें तुम्हारे कान पसंद हैं,

हमें तुम्हारी नाक पसंद है,

हमें तुम्हारी मूंछें पसंद हैं.

हमें तुम्हारे साथ घर जाकर खुशी होगी."



"बहुत अच्छा," चूहे ने कहा.

वह घुटनों तक कीचड़ में चला गया.

"देखो यह मेरा सामने का दरवाज़ा है,"
चूहे ने कहा.

"ठीक है," मधुमक्खियों ने कहा.





फिर चूहा कमर तक कीचड़ में धंस गया.

चूहे ने कहा, "यह मेरा लिविंग रूम है."

"ठीक है," मधुमक्खियों ने कहा.

फिर चूहा ठुड्डी तक कीचड़ में चला गया.

"यहाँ मेरा सोने का कमरा है," चूहे ने कहा.

"ठीक है," मधुमक्खियों ने कहा.





"और अब मैं सोने जाऊंगा," चूहे ने कहा.

उसने अपना सिर मिट्टी के अंदर दबा लिया.

"अरे नहीं!" मधुमक्खियों ने कहा.

"हमें तुम्हारा सामने वाला दरवाज़ा पसंद है.

हमें तुम्हारा लिविंग रूम पसंद है.

लेकिन नहीं, नहीं, नहीं,

हमें तुम्हारा सोने का कमरा पसंद नहीं है!"

फिर मधुमक्खियाँ हवा में उछलीं और उड़ गईं.

और चूहा नहाने के लिए अपने घर चला गया.



दो बड़े पत्थर

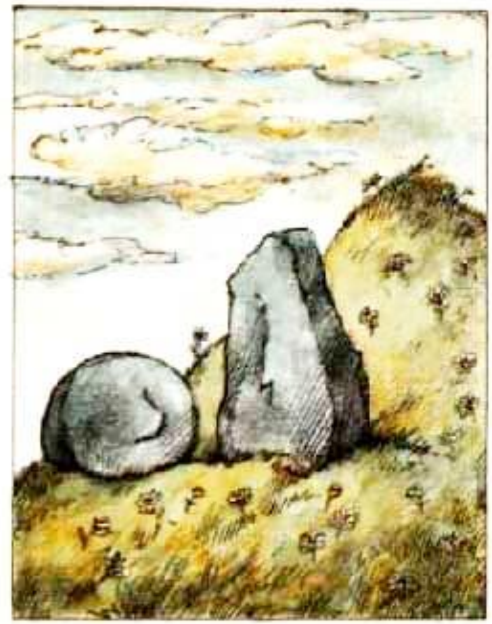
एक पहाड़ी के किनारे दो बड़े पत्थर पड़े थे.

वहाँ घास और फूल उगे थे.

"पहाड़ी का यह किनारा अच्छा है,"

पहले पत्थर ने कहा.

"लेकिन मैं अचरज कर रहा हूं कि पहाड़ी के दूसरी ओर क्या है?"



"हम नहीं पता. और हम वो कभी जान भी नहीं पाएंगे," दूसरे पत्थर ने कहा.



पक्षी आकाश में उड़ गया.

उसने पहाड़ी के ऊपर से ऊंची उड़ान भरी.

फिर वह वापस लौटा और बोला,

"मैंने वहां शहर और महल देखे.

मैंने वहां पहाड़ और घाटियाँ देखीं.

वहां एक अद्भुत दृश्य था."

एक दिन एक पक्षी उड़कर नीचे आया.

"पक्षी, क्या तुम हमें बता सकते हो कि पहाड़ी के दूसरी ओर क्या है?" पत्थरों ने पूछा.



पहले पत्थर ने कहा, "वे सभी अच्छी चीज़ें पहाड़ी के दूसरी ओर हैं."

"यह कितनी दुखद बात है," दूसरे पत्थर ने कहा.

"हम उन्हें नहीं देख सकेंगे. हम उन्हें कभी नहीं देख पाएंगे."

दोनों पत्थर पहाड़ी के किनारे पड़े रहे.

दोनों पत्थर सौ वर्ष तक दुःखी रहे.





चूहा पहाड़ी पर चढ़ा.

उसने अपनी नाक ऊपर उठाई और नीचे देखा.

वह वापस आया और बोला,

मुझे वहां मिट्टी और पत्थर दिखे.

मैंने वहां घास और फूल भी देखे.

वो एक अद्भुत दृश्य था."

फिर एक दिन एक चूहा वहां से गुजरा.

"चूहे, क्या तुम हमें बता सकते हो कि पहाड़ी के दूसरी ओर क्या है," पत्थरों ने पूछा.



पहले पत्थर ने कहा,

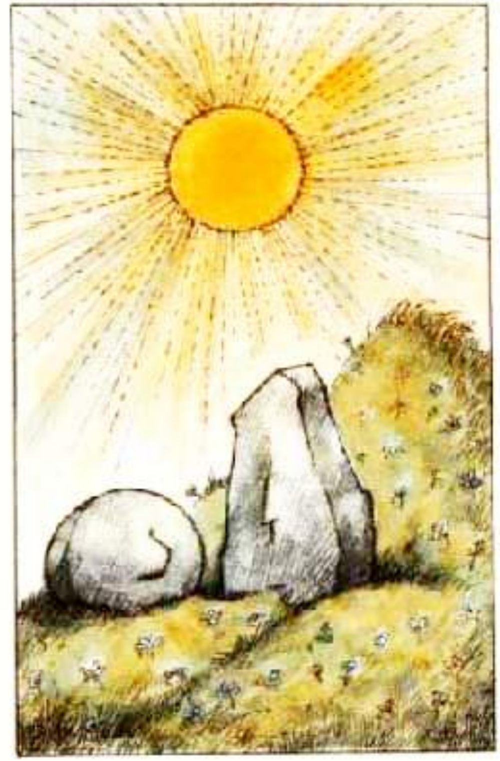
"अच्छा तो पक्षी ने हमसे झूठ बोल था.

पहाड़ी का दूसरा किनारा भी बिल्कुल
पहाड़ी के इस किनारे जैसा ही है."

"ठीक है!" दूसरे पत्थर ने कहा.

"अब हम खुश महसूस कर रहे हैं.

अब हम हमेशा खुश रहेंगे."





झींगुर

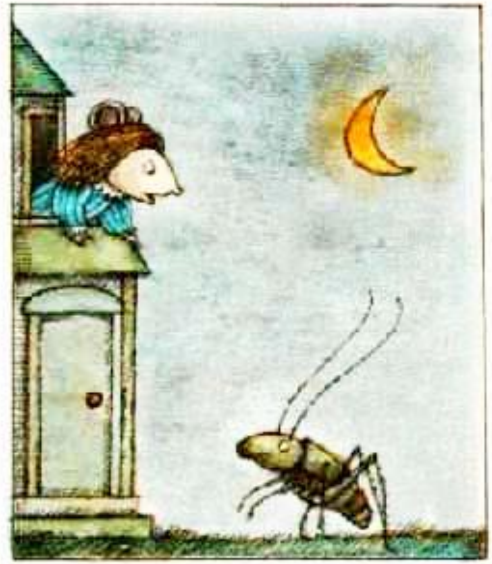
एक रात चूहा जाग गया.

उसकी खिड़की के बाहर चहचहाने की आवाज आ रही थी.

"किस बात के लिए शोर मचा रखा है?" चूहे ने पूछा.

"आपने क्या कहा?" एक झींगुर ने पूछा.

"मैं आपकी बात सुनते समय अपना संगीत नहीं बजा सकता."



"मैं सोना चाहता हूँ," चूहे ने कहा.

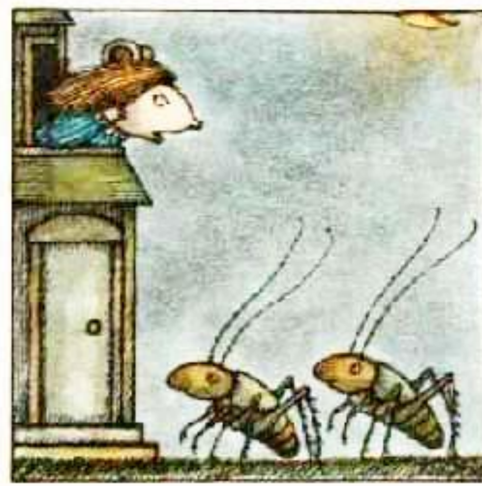
"मुझे संगीत नहीं चाहिए."



जल्द ही वहाँ दो झींगुर चहचहाने लगे.

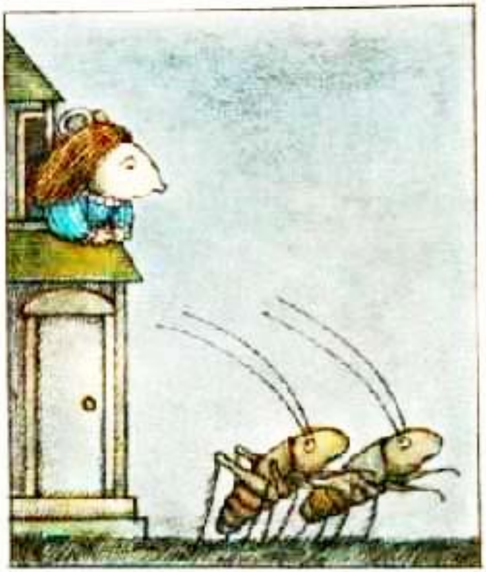
"मैं चाहता हूं कि आप अपना संगीत बंद कर दें," चूहे ने कहा.

"यह संगीत मेरे लिए बहुत शोर है!"



"आपने क्या कहा?" झींगुर ने पूछा.

"आपको और संगीत चाहिए? मैं आपके लिए एक और दोस्त ढूंढ लूंगा."



जल्द ही वहाँ तीन झींगुर चहचहाने लगे.

चूहे ने कहा, "तुम्हें संगीत बंद करना होगा.

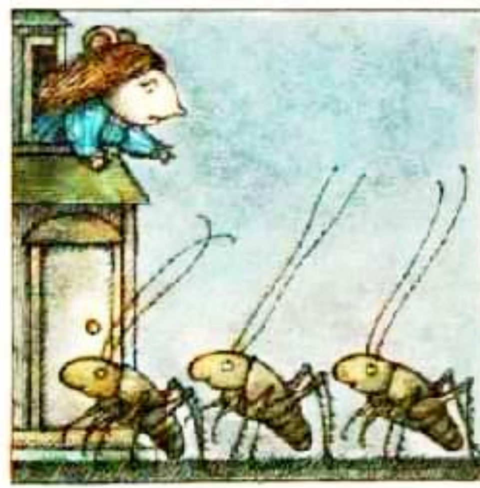
मैं थक गया हूँ.

मैं और अधिक संगीत नहीं झेल सकता!"

"आपने क्या कहा?" झींगुर ने पूछा.

"आपको और संगीत चाहिए?

फिर हम एक और दोस्त ढूंढ लेंगे."



"आपने क्या कहा?" झींगुर ने पूछा.

"आपको और भी अधिक तेज़ संगीत चाहिए?

हम अपने अन्य दोस्तों को भी बुलाएंगे."

जल्द ही वहाँ दस झींगुर चहचहाने लगे.

"रुको!" चूहा चिल्लाया.

"तुम्हारा संगीत बहुत तेज़ है!"

"क्या आपको और तेज़ चाहिए?" एक झींगुर ने पूछा.

"आप चाहें तो हम और जोर से चहक सकते हैं."



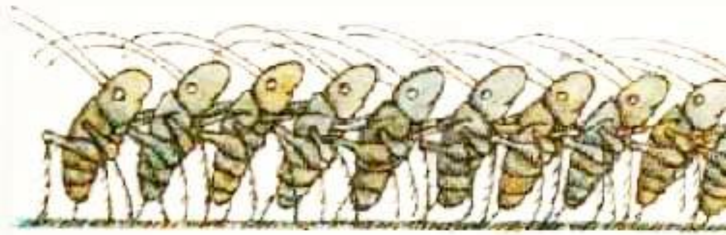
फिर दसों झींगुर और अधिक जोर से चहचहाने लगे.



"कृपया!" चूहा चिल्लाया. "मैं सोना चाहता हूं. मेरी इच्छा है कि आप सब यहाँ से दूर चले जाएँ?"

"दूर चले जाएँ," एक झींगुर ने पूछा. "फिर आपने वो पहले क्यों नहीं कहा?"

"हम चले जाएंगे और कहीं और जाकर चहकेंगे," दस झींगुरों ने कहा.



फिर वे चले गये

और कहीं और जाकर चहकने लगे.



उसके बाद चूहा वापस सो गया.



कांटेदार झाड़ी

एक बूढ़ी औरत अपने घर के दरवाजे पर गई.

वह रो रही थी.

एक पुलिस वाला दौड़ता हुआ आया.

“प्रिय मैडम,” पुलिसकर्मी ने कहा,

“आप क्यों रो रही हैं?”

"अंदर आओ," बुढ़िया ने कहा.

"फिर मैं तुम्हें दिखाऊँगी."





"वो झाड़ी वहां कैसे आई?" पुलिसवाले ने पूछा.

"मुझे नहीं पता," बुढ़िया ने कहा. "एक दिन मैं जब बैठी तो किसी चीज़ ने मुझे चोट पहुंचाई. फिर मैं उठ गई.

फिर मैंने वहाँ एक कंटीली झाड़ी देखी."

बुढ़िया ने कहा, "देखो, मेरे लिविंग रूम की कुर्सी पर एक कांटेदार झाड़ी उग आई है."



"बेचारी बूढ़ी औरत," पुलिसवाले ने कहा.

"मैं आपकी कुर्सी से काँटों की झाड़ी को उखाड़ दूँगा.

फिर आप उस पर दोबारा बैठ सकेंगी."

"नहीं!" बुढ़िया चिल्लाई.

"ऐसा मत करो!

मैं बैठना नहीं चाहती हूं.

मैं अपने पूरे जीवन भर बैठी रही हूं.

मुझे अपनी कंटीली झाड़ी बहुत पसंद है.

मैं इसलिए रो रही हूं क्योंकि मेरी झाड़ी बीमार है.



"देखो?" बुढ़िया ने कहा.

"उसकी सभी शाखे सूख रही हैं."

“शायद काँटेदार झाड़ी प्यासी होगी,” पुलिस वाले ने कहा.

"शायद उसे पानी की ज़रूरत हो."

बुढ़िया ने कहा,

"मैंने इसके बारे में कभी सोचा ही नहीं."

फिर उसने कुर्सी पर थोड़ा पानी डाला.

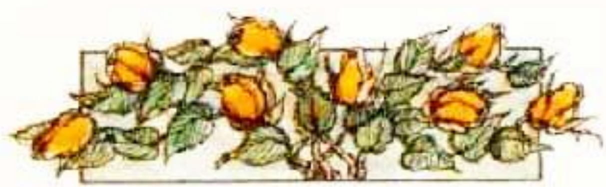




कंटीली झाड़ी काँपने और हिलने लगी.



उसकी शाखाओं पर हरी पत्तियाँ निकल आईं.



पत्तों के पास छोटी-छोटी कलियाँ निकल आईं.



"धन्यवाद, दयालु पुलिसवाले!" बुढ़िया चिल्लाई.

"तुमने मेरी कंटीली झाड़ी बचा ली है!

तुमने मेरे घर को सुंदर बनाया है!"

उसने पुलिसवाले को चूमा और उसे घर ले जाने के लिए गुलाब के फूलों का एक बड़ा गुलदस्ता दिया.

कलियाँ खुल गईं.

और उनमें से बड़े गुलाब के फूल खिले.





"देखो," चूहे ने कहा.

"मैंने तुम्हें चार कहानियाँ सुनाई हैं.

वे कहानियाँ तुम्हारे माउस सूप को बहुत स्वादिष्ट बना देंगी."

"ठीक है." नेवले ने कहा, “लेकिन मैं उन कहानियों को सूप में कैसे डालूँ?'

"वो बहुत आसान है," चूहे ने कहा.

"बाहर जाओ और मधुमक्खियों का छत्ता ढूंढो,

कुछ कीचड़,

दो बड़े पत्थर,

दस झींगुर,

और एक कंटीली झाड़ी खोजो.

फिर वापस आकर उन सभी को सूप में डाल दो."



नेवला बहुत तेजी से बाहर भागा.

वो दरवाज़ा बंद करना भूल गया.

फिर नेवले को मिला

मधुमक्खियों का छत्ता.

मधुमक्खियों ने उसे कई बार डंक मारे.





नेवले को मिली कुछ मिट्टी.

लेकिन वो गीली और चिपचिपी थी.

नेवले को मिले दो बड़े पत्थर.

लेकिन वे काफी भारी थे.



नेवले को मिले दस झींगुर.

लेकिन उन्हें पकड़ने के लिए

उसे छलांग लगानी पड़ी.





नेवले को मिली एक कंटीली झाड़ी.

लेकिन झाड़ी ने उसे चुभोया और नोचा.



लेकिन जब नेवला अपने घर वापस लौटा तो उसे बेहद आश्चर्य हुआ.

खाना पकाने का बर्तन खाली था.



"अब मेरा माउस सूप सच में बड़ा स्वादिष्ट बनेगा!" नेवले ने कहा.





चूहा कूदकर सुरक्षित अपने

घर चला गया था.

फिर चूहे ने आग जलाई.

उसने रात का खाना खाया,



और फिर उसने अपनी
पुस्तक खत्म की.